शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नोतरा प्रथा के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में मस्ती और उल्लास का अध्ययन

डॉ वंदना बरमेचा
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी)
श्री गोविंदगुरु राजकीय महाविद्यालय
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

भारत के विभिन्न अंचलों में आदिम समुदाय निवास करता है। यह समुदाय आधुनिक सभ्यता से दूर आज भी प्रकृति के अत्यधिक निकट है। इनमें सामजिक रिश्तों की गर्माहट आज भी उपस्थित है। इस कारण इनका जीवन आनंद से सराबोर रहता है। किसी भी प्रकार के सामाजिक, आर्थिक संकट के समय समाजजन की मौजूदगी जीवन को सहज बना देती है। आर्थिक समस्या को हल करने के लिए आदिवासी समुदाय में 'नोतरा प्रथा' प्रचलित है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस प्रथा की जानकारी और इसमें गाये जाने वाले गीतों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

आदिवासी समुदाय प्रकृति के सर्वाधिक निकट रहकर अपना जीवन-यापन करते हैं। वहां मस्ती से जीते हुए वर्तमान को ही सब कुछ मानते हैं। सहज, सरल, भोलेपन के साथ मेहनतकश उनकी अन्यतम विशेषता है। इनमें प्रचलित विभिन्न प्रकार की सामजिक परम्पराएँ और रीति-रिवाज इन्हें शहरी सभ्यता से भिन्न सिद्ध करते हैं। आदिवासी विषम आर्थिक स्थितियों में रहता है। उसके पास खेती के लिए भूमि तो है, लेकिन खेती के पुराने तौर-तरीकों एवं साधनों के अभाव में उन्नत कृषि नहीं कर पाता है। परिणाम स्वरूप पैदावार कम होती है। भूमि नहीं होने अथवा कृषि से सम्बन्धित कार्य नहीं होने पर वह मजदूरी करने निकल पड़ता है। मेहनती स्वभाव का सीधा-सादा आदिवासी बहुत अधिक पाने की चाह तो नहीं रखता, लेकिन शादी-विवाह जैसे अन्य कार्यक्रम के अवसर पर वह कुछ आवश्यकता के अनुसार एवं कुछ समाज में अपनी मान-प्रतिष्ठा बचाए रखने के लिये क्षमता से अधिक खर्च करना चाहता है। दूसरी ओर वह ऋण लेकर साहूकार के चंगुल में भी नहीं फंसना चाहता। इसके लिए आदिवासी समाज में एक सुंदर प्रथा प्रचलित है, जिसे 'नोतरा' प्रथा का नाम दिया गया है। इस प्रथा के कारण आम आदिवासी घर में होने वाले किसी भी बड़े कार्य के लिये धन की उलब्धता हेतु चिंतित नहीं रहता है। वह भली-भांति जानता है कि जब भी कोई आवश्यकता होगी तो वह 'नोतरा' करवाकर रुपये इकट्ठे कर लेगा। धन के अभाव में उसका कोई कार्य नहीं रुकेगा।

नोतरा प्रथा

नोतरा प्रथा आदिवासी समाज की सामाजिकता का सशक्त एवं सुंदर उदाहरण है। इसके अन्तर्गत जिस व्यक्ति के घर में विवाह या कोई अन्य कार्य सम्पन्न होने वाला होता है, वह होने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वाले खर्च की व्यवस्था करने के लिये समाज के प्रमुख लोगों के पास जाकर 'नोतरा' पढवाने के लिये निवेदन करता है। समाज की पंचायत के व्यक्ति उसकी आवश्यकता को देखते हुए उसे अनुमति प्रदान करते हैं एवं एक तिथि तय कर देते हैं। तत्पश्चात सम्बन्धित व्यक्ति पीले चावल लेकर सभी समाजजनों निमंत्रण देने जाता है। निमंत्रित लोगों को वह अपनी इच्छानुसार दाल-चावल एवं मीठे से लेकर मांस-मदिरा की दावत देता है।

नोतरा में आमंत्रित व्यक्ति अपनी सामर्थ्य एवं इच्छानुसार सहयोग राशि प्रदान करते हैं। यह राशि समाज के प्रमुखों द्वारा निर्धारित व्यक्ति एकत्रित करते हैं एवं उसका पूरा हिसाब रखते हैं। कार्यक्रम सम्पन्न होने पर एकत्रित राशि में से भुगतान किया जाता है। शेष राशि हिसाब के साथ नोतरा पढवाने वाले व्यक्ति को दे दी जाती है। इस तरह जिस किसी व्यक्ति के घर विवाह सम्बन्धी या अन्य महत्वपूर्ण कार्य होता है, उसकी रुपयों से सम्बन्धित आवश्यकता पूर्ण हो जाती है और कोई तनाव भी नहीं रहता।

नोतरा में एकत्रित व्यक्ति जब साथ मिलकर बैठते हैं तो भोजन ग्रहण करते हैं। प्रथा का निर्वाह करते हुए सहयोग के रूप में धनराशि प्रदान करते हैं एवं मस्ती एवं उल्लास को व्यक्त करने के लिये सामूहिक रूप से गीत भी गाते हैं। इन गीतों पर लिखी कोई पुस्तक प्राप्त नहीं हुई। अतः गीतों के अध्ययन हेतु स्वयं ही विभिन्न आदिवासियों से सम्पर्क करना पड़ा। उनमें से कुछ ने उपेक्षा की तो कुछ ने न केवल गीतों को गाकर सुनाया वरन् उन्हें लिपिबद्ध करवाने में भी सहयोग किया।

इस अवसर पर एक-दूसरे को चिढाना, मजाक, मस्ती सब चलता रहता है।

नोतरा के गीत

एक गीत उदाहरण स्वरूप इस प्रकार है

"आईमाम तमे फरेल नाहि
भाइया तमारा आवता नाहि
नोतरो तमारो मेलेल नाहि
नोतरो तमारो आवतो नाहि
नोतरो तमे मेलता रेता
नोतरो तमारो आवतो रेतो।''1

नोतरे के इन गीतों में कभी भाई को याद किया जाता है, कभी मामा को तो कभी वेवाई को। इन गीतों में प्रेम भी है और उलाहने भी। मामा को :

"आमने तानो मारतो आइयाँ
मामने तानो मारतो आइयाँ
वमे मामा नोतरे आया
वमे मामा नोतरे आया।"2

वेवाई को तो सदैव ताने उलाहने ही दिये जाते हैं। भले ही किसी भी अवसर पर गाए जाने वाले गीत हो, किसी भी समाज एवं संस्कृति में गाए जाने वाले गीत हों। नोतरे पर भी ऐसा ही गीत गा गाकर वेवाई को सुनाया जाता है।

"वेवाई नोतरो नाहिं मेले
वेवाई मेडम लेतो जाजे।''3

इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में एक और ताने उलाहने हैं, वहीं दूसरी ओर इस अवसर पर मेहमानों के एकत्रित होने से अपने दोस्तों-रिश्तेदारों से मिल पायेंगे, यह अभिलाषा भी प्रकट होती है।

"लीलु लीलु है तलाब लीलवणी
मने नोतरे जावा मलहे मेरा दोस्त लीलवणी।"4

यह अनुभव इस क्षेत्र (बाँसवाड़ा) में निवास करने के कारण आँखों देखा ही है कि नोतरे में जाना इन समाजजनों (आदिवासियों) के लिये एक त्यौहार या उत्सव की तरह ही होता है। न खाने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का कुछ अतिरिक्त मतलब, केवल दाल-चावल और नुक्ति मिले, कोई अन्य माल मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं, न कपड़े पहनने से कोई खास मतलब। वही रुटीन कपड़े, बस एक अतिरिक्त सिलवा कर रखी गई कपड़ों की जोड़ी, जो प्रायः कई सहेलियां एक ही रंग की बनवा लेती हैं और फिर एक साथ पहनती हैं। जाना भी पैदल-पैदल या टेम्पो में लटककर है, फिर भी उमंग से भरे हुए हँसतेमुस्कराते हुए चेहरे नोतरों में इकट्ठे हो जाते हैं। मेजबान भी मेहमानों के आने की तैयारी बड़े उत्साह के साथ करते हैं। यही भाव इस गीत में व्यक्त है :

"ठण्डी माटली नो पाणी मेल दो मैदान म आइया
आइया आवहे ने पाणी पूछा है मैदान म भाइया।"5

नोतरे के कार्यक्रम के लिये माण्डवा भी रोपा जाता है और वह भी अच्छी तरह होना चाहिये ताकि जो भी मेहमान आए वो अच्छी तरह बैठ सके और नोतरे का कार्यक्रम अच्छी तरह देख सके।

"माण्डवों रोपो मोकलो रे हक जीण ना वाला
रावणों आवहो हामटो रे हक जीण ना वाला
× × ×
बाबा आवे हामटा रे हक जीण ना वाला
× × ×
कागा आवे हामटा रे हक जीण ना वाला
× × ×
मनखा आवे हामटा रे हक जीण ना वाला
रोपो मोकलो रे हक जीण ना वाला।"6

यह माण्डवा रोपने के लिये आदिवासी परिवार के बड़े जमाई को ही बुलाना चाहते हैं। महिलाएँ और लड़कियाँ गाती हुई कहती हैं कि जमाई जल्दी आओ और माण्डवा रोपने का कार्यक्रम करो तथा हे बहन तुम माण्डवा की आरती उतारो।

"जमाई माण्डवो रोपो ते वेला आओ रे
मरा कईना जमाई नोतरा
जमाई माण्डवो रोपो ते वेला आओ रे
मार दूदा जमाई नोतरां
बेना मांडवो वदावो ते वेला आवो रे
मारी कल्लू बेना नातेरां।"7

इस तरह गीत गाते हुए फिर नोतरा रखने का समय आ ही जाता है। उस समय भी लोग अधिक से अधिक धनराशि नोतरे में रखे इस सम्बन्ध में उन्हें प्रेरित करने के लिए भी महिलाएं विभिन्न सम्बन्धियों को सम्बोधित करती हुई कहती हैं :

मेलदो नी कलसींग जमाई
हजार वाली नोट पानसे वाली नोट
हालो परनावो है
हजार वाली नोट पानसे वाली नोट
मेलदे नी दलसिंग भाइयां
हजार वाली नोट पानसे वाली नोट
भाइयां परनावो हैं।"8

इस तरह नोतरे के इन गीतों में केवल प्राचीन परिवेश ही नहीं है, अपितु नवीन स्थितियों को भी जोड़ा गया है। कहीं इन गीतों में कॉलेज भी आता है, कहीं विमल गुटखा जो आदिवासी पुरूष एवं महिलाएं बहुतायत से खाते हैं तो कहीं मोबाइल भी आ जाता है :

"हाथ म मोबाइल है हूँ टेंशन है बेना
तमारे आइयाँ साथ है हूँ टेंशन है बेना।"9

इस प्रकार आदिवासियों के समाज जीवन की यह नोतरा प्रथा जो उनके सामाजिक होने, मिलजुल कर जिम्मेदारी उठाने एवं उत्सव मनाने को दर्शाती है। किसी के भी घर में कोई कार्यक्रम है

तो वह उसकी अकेले की नहीं अपितु समाज की, रिश्तेदारों की, गाँव के लोगों की सबकी जिम्मेदारी है। इसी तथ्य का एक दूसरा पक्ष यह भी है कि इस प्रथा के माध्यम से एकत्रित धनराशि का अनेक बार दुरूपयोग भी हो जाता है।

निष्कर्ष

नोतरा प्रथा के अवसर पर गाये जाने वाले इन विभिन्न गीतों के विश्लेषण से यह तो प्रकट होता ही है कि इसमें विषयों का वैविध्य है। कहीं मोबाइल की बात है तो कहीं विमल की, कहीं नोटों की तो कहीं मांडवा रोपने की, कहीं संबंधों का हवाला है तो कहीं संबंधियों को उलाहना। अपने जीवन में सहज, सरल एवं निर्भीक ढंग से जीने वाले इन आदिवासियों का जीवन-दर्शन ही मानो सहजता का दर्शन है। जीवन की छोटी-छोटी खुशियों में मगन रहना, हँसते-मुस्कुराते रहना, श्रम करते हुए जीना, कल की चिंता न करना एवं मस्त रहना यही इनका दर्शन है। इसे एक शब्द में बाँधने को कहा जाये तो यह सहजता का ही दर्शन है। यही इनके जीवन का मूलमन्त्र है। यही बात इनके गीतों में भी दृष्टिगोचर होती है।

एकदम सरलता, सहजता, भोलेपन से अपने ही अलग राग में सामूहिक रूप से गाये गए ये गीत किसी शिल्प के मोहताज नही, क्योंकि जहाँ शिल्प पर सोचा जायेगा वहाँ तो बनावटीपन आ ही जायेगा और बनावटीपन की जगह तो न गीतों में है न ही जीवन में। वहाँ अगर कुछ है तो वह है मस्ती और उल्लास। खुशी एवं प्रसन्नता किसी दौलत की मोहताज नहीं होती। यह तथ्य इनके दमकते एवं मुस्कुराते चेहरों से स्वयमेव प्रकट हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1-5 आदिवासी समाज के विभिन्न व्यक्ति जिनसे गीतों को लिपिबद्ध करने में सहयोग मिला
6 जनजातीय लोक साहित्य - प्रेमचंद डाबी
7-9 आदिवासी समाज के विभिन्न व्यक्ति जिनसे गीतों को लिपिबद्ध करने में सहयोग मिला
आदिवासी विमर्श - डॉ. रमेशचन्द्र मीना